पेज 8 से आगे

देशी बीजों का जवाब नहीं

इन बीजों की पहचान, संग्रहण, संरक्षण और संवर्धन करने में किसानों और महिलाओं का योगदान रहा है। और कृषि की समृद्धता ने ही हमारे किसानों व गांवों को सम्पन्न बनाया था। होशंगाबाद जिले के ही नंदरवाड़ा के विश्व प्रसिद्ध डा. आर. एच. रिछारिया ने किसानों से धान की 17 हजार देशी का संग्रह किया था। जिसमें अधिक उत्पादकता देने वाली, सुंगधित व अन्य तरह से स्वादिष्ट थीं। इनमें कई देशी किस्में चोरी छिपे विदेश में पहुंच चुकी है। वर्ष 2002 में पहले धान की देशी किस्मों की चोरी का मामला सामने आया था। सिंजेटा नामक बहुराष्ट्रीय कंपनी और रायपुर कृषि विश्वविद्यालय के बीच एक गुपचुप समझौता होने जा रहा था जिससे धान की देशी किस्मों का खजाना बहुराष्ट्रीय कंपनी को सौंपा जा रहा था। जिसे डॉ. रिछारिया ने बहुत मेहनत से एकत्र किया था। पर कड़ा विरोध होने पर इस पर रोक लगी।

गर्म जलवायु वाले देशों में ही जैव विविधता

बीज सबकी साझी धरोहर हैं। इन्हें किसी प्रयोगशाला में नहीं बनाया जा सकता। पश्चिम के देश हमारे जैसे गर्म जलवायु वाले देशों से ये बीज ले गए और इनमें से एक-दूसरे से संकरण करके संकर बीज तैयार कर रहे हैं। और हमें ही महंगे दामों में बेच रहे हैं। देशी-विदेशी कंपनियों का इन पर पेटेंट और एकाधिकार हो रहा है। उनका कारोबार बढ़-फैल रहा है। पर इससे किसान कर्जदार हो रहे हैं और अपनी जान दे रहे हैं।

दूल्हा आया तो बारात आ गई। यानी ज्यादा पानी, ज्यादा खाद और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ा। अब देशी गेहूं के स्थान पर संकर बीज आ गए। जी. डब्ल्यू 273,322, 190 एम पी 1142, 3020, और एच आई 1077 जैसी किस्में बोई जा रही है। इसके पहले एच डी 1467, एचडी 1593, एच डी 1553, नर्मदा 4, एच डी 1925, 227, 308, राज 319 किस्में थीं। जानकार बताते हैं कि ये हाईब्रीड में ज्यादा पानी, ज्यादा रासायनिक खाद, ज्यादा कीटनाषक अनिवार्य है।

शुरूआत में तो सरकार ने सब्सिडी देकर इस रासायनिक खेती को बढ़ाया और अब उससे पीछे हट रही है। अब खेती में किसान की लागत बढ़ गई है और कंपनियों की मोटी कमाई होती है। बीजों के संरक्षण- संवर्धन में लगे जेकब नेल्लीथानम का कहना है कि देशी बीज स्थानीय मिट्टी-पानी के अनुकूल होते हैं। इनमें सभी तरह की परिस्थितियों में उपज देने के गुण मौजूद हैं।

जबकि हाल ही विदेश में अध्ययन कर लौटे सुरेश कुमार साहू का कहना है कि हमें भोजन की जरूरत के अनुसार खेती करनी चाहिए। किसान ज्यादा पैदावार के लिए खूब मेहनत करता है। ज्यादा रासायनिक खाद डालता है लेकिन उसकी फसल को उचित दाम नहीं मिलता। औने-पौने दाम में बेचकर वह फिर महंगे दामों में अपनी भोजन की जरूरत के लिए अनाज खरीदता है, जो महंगा होता है। इसके बजाए स्थानीय स्तर पर ही भोजन के लिए अन्न उगाया जाए ओर फिर उसे स्थानीय स्तर पर ही उपयोग में लाया जाए तो उचित रहेगा।

जी एम बीजों के खतरे हैं

जैव तकनीक से तैयार जी एम बीजों के बारे में अनुभव अच्छा नही रहा है। बी. टी कपास के किसानों के आत्महत्या के समाचार आते रहे हैं। खेती-किसानी पर सतत अध्ययनरत लेखक व अर्थशास्त्री सुनील कहते हैं कि कपास के इलाकों में ही किसानों की सबसे ज्यादा आत्महत्याएं हो रही हैं। जीन संशोधित सोयाबीन बीजों से कुछ पैदावार तो बढ़ सकती है लेकिन लागत और जोखिम भी बढ़ेगा। इस तकनीक के कई खतरें भी हैं। कई देशों ने जी एम बीजों पर रोक लगाने की मांग जोर पकड़ती जा रही है। हाल ही में अपने देश में जन दबाव के चलते बी टी बैंगन पर रोक लगी है।

इसलिए देशी बीजों की टिकाऊ खेती की ओर बढ़ना जरूरी है, जो हल-बैल और गोबर खाद पर आधारित हो। खासतौर पर आज जब अन्नदाता किसान कर्ज के बोझ तले दबकर आत्महत्या कर रहा है। देशी बीजों से जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ती जाती है। फसल चक्र से जमीन में उर्वरकों का संतुलन बना रहता है। इससे सबसे यह खेती टिकाऊ, पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित , जैव विविधतापूर्ण और पैदावार बढ़ाने वाली है। धान की तरह गेहूं में भी देशी बीजों से मेडागास्कर पद्धति से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। यानी देशी बीज, गोबर खाद और हल-बैल की खेती की कम लागत वाली खेती भी एक रास्ता है, जिससे क्रमश: उपज भी बढ़ाई जा सकती है।

(इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप 2011 के तहत यह रिपोर्ट लिखी गई है)

10 Dec, 2011, Daily Chhattisgarh, 2011